

DPN 6469

1. दक्षिणकाली त्रैलोक्य मोहन कवच
2. लक्ष्मी नृसिंह कवच

1. DAKṢINAKĀLĪ TRAILOKYA MOHANA
KAVACA
2. LAKṢMĪ NR. SIṂHA KAVACA

Title :

Run. No. 7194

Cat. No.

Micro. No.

Subject *कावच Kavaca Hymn*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 13 X 5.5

Folios 18

Lines (in a page) 4 / 5

☒ Compl. / ☐ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

Illus. : Two colour paintings

Material : palmleaf / paper / ☒ thyaṣaphu /

Condition : ☒ fine / ☐ damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
इन्द्रादेव संसा प्रीतिकाले । महा निवेष्टनी कवचं मह्यं च कथ्यते ॥

0

cms.

5

10

15

20

25

समाप्ति वाक्य / Colophon

इति श्री ब्रह्मात्मने श्री हस्तिना कालिकाया एतौ लोकत्र मोहनं नाम कवचं संपूर्णं ॥ शुक्ललोकत्र
पाठवान् ॥ नमः सिंह दास्यन् मनोऽपि शिथिलम् ॥

2. Inflection / Beginning line

३० नमो हरिहाराय ॥ अर्धोवाच ॥ अनेक मन्त्र कोटीनां हरिहारा नाम संचाल ॥
अनेक विधी कथायां वि ॥

अनेक विधी रक्षाया विष रोगाग्निकाणं ॥ ३० ॥ अष्ट श्री लक्ष्मीनृसिंह मन्त्र कवच स्तु

अथा ऋषिरणुषुप दन्तः इति वीजं सैः शक्तिः सैः कीलवं नृसिंहो देवाः मम सर्व
 रोगान् कौ पन्नग व्याघ्र वृद्धिक शत प्रेत पिशाच शाकिनी यन्त्र मन्त्रानेक
 निवाणार्थे जपे । विनियोगः ॥

हारी लक्ष्मी नृसिंह उक्त्वां सिद्धुर्गः ॥

5



0

cmts.

5

10

10

5

0

cm

5

10



10 श्री गणेशाय नमः ॥ ददददमहा दददद
नयीनिकानक ॥ महाविश्वनीकदचं मयं त्य
कथययरा ॥ १ ॥ श्रीनिवादाच ॥ भृगूदविमहा
सर्वसर्वविद्यारुमारुमा ॥ सर्वस्वनीमहाविद्या

5 सर्वदददयूजिगा ॥ २ ॥ अथाः कटाकमा
॥ ३ ॥ लाक्षविजयीरुनः ॥ बहवकमलाना
विरुवकायजायनिः ॥ ३ ॥ सवीयनिर्दवना
यमायिधर्मनायकः ॥ ४ ॥ लाक्षयाविद्यारुमा

10
लाग्रीह विप्रिया ॥४॥ दिनस्वामिन विप्रिया निमय
निमरुचन ॥ वन ॥ मयिज लाधी मरुचन विप्रिया निमय
न ॥ ७ ॥ अथाहम गति वीयु गल ॥ विप्रिया निमय ॥
वागीधन ॥ सूनाचार्य देहाचार्य ॥ कविर्महान् ॥ ८ ॥
वहिसकलादवा सर्वसिद्धिधनाप्रिय ॥ गस्यामुकव

5
वयं यत्समयत्सागृहावया ॥ १ ॥ अस्य श्रीमदक्रिणका
लिकामलमयमहाकववस्य महाकालरुचनवसवि ॥
अनूद्युक्त ॥ श्रीमदक्रिणकालिकादवना ॥ धर्मार्थः
काममाकांक्षजयविनियोग ॥ ललाटयातुर्वापि
विनावाधितासदा ॥ नयुर्भसदायातुर्वापि ॥

10
विना ॥ ९ ॥ कौं ४ या उ म ना सा व द्म न स वि ना क र व ॥ कौं २
व व द न या उ ग क ना ना वि ना स दा ॥ १० ॥ कौं सा हा भ व
न या उ ना म ने व य यू जि ना ॥ ओं कौं कूं कौं सा हा म जि कौं
व सर्व दा व तु ॥ ११ ॥ द न य किं स दा या उ ओं कौं कौं कूं सा
हा म म ॥ उ कि म् कि य दा का ली धि अ नि त् य स स वि ना ॥

५
१२ ॥ अ द्वा ध न स दा या उ कौं २ कूं २ कौं २ म म ॥ सूर्य ना
ना धि ना वि द्या स र्व सि धि य दा य का ॥ १३ ॥ क न्ठ या उ
स दा का ली नं कौं कौं कूं सा हा स दा ॥ व रु ना ना धि ना
वि द्या व तु र्व न र् रु त य दा ॥ १४ ॥ रु रु या उ स दा कौं २
कूं २ कौं २ सा हा म म ॥ १५ ॥ ओं कौं कूं कौं रु रु सा हा व

वनत्रयदायका ॥२१॥ जौं शद कि न का लि क जौं २
 सा हा क टि स्तु रं ॥ द्वाद गी च म हा वि या ना य व म
 वि ना स दा ॥२२॥ जा नू नी या तु जौं कीं दूँ जौं सा हा व
 तु जं च क ॥ द्वाद गी च म हा वि या य द्वाद ना य स वि
 ना ॥२३॥ जौं दूँ जौं द कि न का लि क जौं दूँ जौं सा हा

वतु ॥ चतुर्द गी या द य म् पू ना द व न स वि ना ॥२४॥ जौं
 दूँ जौं द कि न का लि क जौं दूँ जौं च ग थं गु लि ॥ या तु
 मी द्वाद गी का ही कृ त या ल न स वि ना ॥२५॥ जौं दूँ
 जौं द कि न का लि क जौं दूँ जौं सा हा ॥ न र य यं कि स दा
 पा तु यं च द गी म रु न्य नी ॥२६॥ जौं ३ दूँ २ जौं २ जौं २

10
ॐ २५ ३ स्वाहा ॥ मम यत् सर्वं सदा यातु यातु भी रुं न व
धनी ॥ २९ ॥ ॐ ३ यातु भामा नि ॐ २ न रुतु च म्म नि ॥
मां सं यातु सदा ॐ २ न कां द कि न का लि क ॥ २८ ॥ ॐ
२ म वि रु म स्मि म ॐ ३ ॐ २ न रुतु सर्वदा ॥ ॐ ३ ॐ ३
दा यातु न ॐ स्वाहा सदा वतु ॥ २९ ॥ द्वा वि न त् य रु नी

७
विद्या सर्वला कषू द र्त्त रा ॥ महा माय धनी विद्या सर्व
न रुतु ॐ म यि ता ॥ ३० ॥ सूर्य वं न न रा म न् साम न
जा म द त्रि ना ॥ जय न न सूर म न्न न व लि ना ना न द न
व ॥ बी सी य न न य व न न रु रु ना क अ य न व ॥ ३१ ॥
क यि ल न व सि ष्ठ न ॐ न रु ति बू न न व ॥ ३२ ॥ मा र्क

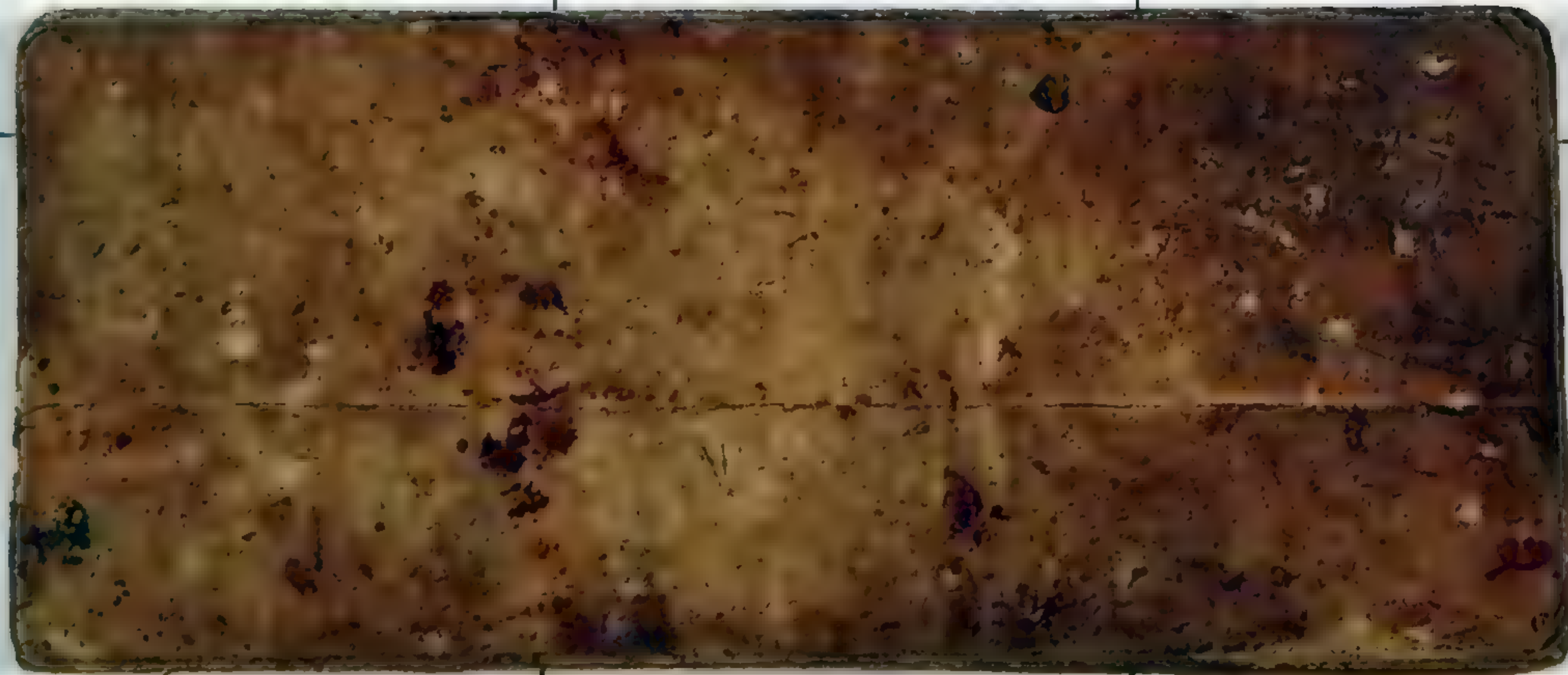
ॐ यश्च नैव डा न स स्य रामया ॥ अथ नृगनक
 ॐ न तान दा जन जङ्गना ॥ ३३ ॥ सर्वे नाना विना विद्या
 जना मृत् विना निनी ॥ यद्गु विद्यामहा काली विद्या ॥
 हीय कीर्तिना ॥ ३४ ॥ काली कया लिनी कला कुरुकः
 हा विना विनी ॥ विद्य विज्ञान ॥ अथ अथ रा दी प्राद्यन वि

षा ॥ ३५ ॥ नीलाद्य नावला काचमाज मूडा य कीर्तिना ॥
 जना सर्वो रव भूधना मू० माला विह विना ॥ ३६ ॥ कूं कूं
 काना दहासन सर्व उ या उ मांसदा ॥ वक्राणी या उ मांस
 वृक्षा यो वेष्टु वी सदा ॥ ३७ ॥ माह म्बनी या उ या म्या
 वामू गु नेम न सदा ॥ कोमानी यन्विमया उ वायथवा

यत्राजिमा ॥३८॥ वानाही चारु नयातु उ म न्या नान मि
हिका ॥ अथ उ र्ध्व यातु काली या विवृ क्त कालिका
३९ ॥ जल सु लच यापान मय नला ज न मृ द ॥ ना
स्मान जल स्मान विवाद मन गन ॥ ४० ॥ मवा मन
मम नच नू या म नच तु य ॥ यत यत रय स्मान

सर्व उ यातु कालिका ॥ ४१ ॥ नरु उ निधि वा नच या म
कन न क वृ च ॥ मा सय क व ल नच या म दं का नि मय
के ॥ ४२ ॥ दिवा ना जो निवा यातु स न्ध या यातु कालि
का ॥ सर्व उ कालिका यातु कालिका यातु सर्व दा ॥ ४
३ ॥ सय नः नू या नित्यी क व च निद ता पि न ॥ सर्व

5



0 cm

5

10

5



0 cm

5

10

याययनित्यस्य सगच्छविसन्निभो ॥ ४४ ॥ उल्ल
 मगारुनेनामकवचंदवद्वर्ह ॥ यव्य १० त्सा
 केऽष्टासर्वकर्मजयान्वितः ॥ ४५ ॥ सर्ववर्मा
 वद्धर्मसर्वविद्यमयः ॥ ४६ ॥ क्ववन्नृवविहारी
 सुवाग्भाकादिसमः ॥ ४७ ॥ गणेशमवमुनिवना

दूयकामसमः सदा ॥ वायुल्लवलायनः महाम
 र्वसर्वगः ॥ ४८ ॥ ज्ञेयवर्तुलिङ्गकालादि
 त्यावाक्यनिर्यथा ॥ जनान्मृत्युविनिर्मुक्तिः स
 सर्वदमकः ॥ ४९ ॥ ज्ञेयदममतिः ॥ गणेशराद्यो
 दिकसमन्वितः ॥ यदहंकृतनित्यकवचंदवद्वर्ह

॥ ५२ ॥ नमो कानरुयंगस्य नमो नमयनाडयः ॥ महा
 उर्वविवादवत् नमो वरुयंगनहि ॥ ५० ॥ संग्रामयुक्त
 कुरुयथावद्विदहृत् नमो ॥ वक्रास्त्रादीनि ममामि
 म्याहिकं टका निव ॥ ५१ ॥ गह्यदहनरिन्दनिवज
 ल्यरुवदयः ॥ ग्रहलग्नियिमावाभ्ययकनाकसदिनः

ना ॥ ५२ ॥ सर्वद्वस्यप्रनामनि हि संकानम्यमिद्वै ॥
 नदहनदह्यमिननाययगलास्किनः ॥ ५३ ॥ नमो
 वयनिवातायि कुर्मनकुरुमययः ॥ युरुवत्या
 कासा नहिर्मकुरुममी ॥ ५४ ॥ जलसूयद्विकासा
 याः नकुरुमिनमययः ॥ वक्रकिंकथयिष्यामि सर्व

सिद्धिमुपातरुं ॥ ७७ ॥ नाना राग सुखं तु क्वा स्व
 च्छया निवर्गावर्ज ॥ तिरिव त्वायूजयित्वा च क्षत्रय दं
 म सं गतं ॥ ७८ ॥ माह नरु मरु न क व माने वा ट न र
 म ॥ बाल वं ध्याव याना नी व ध्याव मृत य चि नी ॥ ७९ ॥
 कं १० वा वाम वा हो वा तिरिव त्वा क्षत्रय द्य दि ॥ गदायू ज

तरु त्स र्वा विनायू ४ य त्रि न ४ पु त्रि ४ ॥ ८० ॥ स्वामि ना व न्न
 रा सा वि धन धा न्य सम नि ना ॥ रू द क व द म स्त्रा त्या या ज
 य त्वा ति काम न्न ॥ ८१ ॥ ध्या मन का टि जा य न न स्य दि
 या न सि ध्धि नि ॥ य द य द रु व द्दु र्व लो का ना नि नि दि ना क र्व
 ॥ ८० ॥ रू रु ता क म स्त्रा द्दु ४ र्वी य न च न न क र्व १ ॥ रु

३ मनुसमंस्तथायाजयत्कवचाहमं ॥ ३१ ॥ तस्य विद्या
 त्वत्सिद्धिस्तस्य सत्यं वनानन ॥ यत्तु दं कवचं दिव्यं
 यकाभक्तिवद्धारुव ॥ ३२ ॥ रुक्मायः प्रवृत्तयः
 साधकाय यकाभय ॥ ३३ ॥ निश्रीनूद्यामलश्रीद
 किनकालिकायास्तुलायुक्ता रुक्माहर्ननामकवचं सयूक्तं ॥

७ रुक्मस्तुल्यवकया ० कानां ॥ ३४ ॥ रुक्मायः प्रवृत्तयः
 नथ सिद्धिस्तु सर्वदा ॥ ३५ ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 वक्ष्यामि ॥ अनेकमनुकाटीनां नृसिंहानामसं
 वयं न ॥ अनेकविधिवद्धारुव विषयागमनिवाव
 वं ॥ ३६ ॥ अस्यां लक्ष्मी नृसिंहमनुकवचं सयूक्तं

10
मषिन्वयुष्यकृन्वः ॥ ओं वीजं वीं न किं ॥ वीं की
ल कं नृ सिं होय वता मम सर्वत्रा गहन वी नय
न स याद्युष्टि कुरु स पुन पि न्मवे न्म कि
नी यन्म स कान क निवान्त मर्थ जय विनि
याग ॥ ॥ ॐ ह्रीं मृदु सा र्या नमः ॥ ॐ पुं
वर्जनी र्या नमः ॥ ॐ ह्रीं भव मा र्या नमः ॥ ॐ वीं

5
मृनामिका र्या नमः ॥ ॐ वीं कनि सि का र्या न
मः ॥ ॐ ह्रीं कव गल पृष्ठा र्या नमः ॥ ॐ ह्रीं
दय या य नमः ॥ ॐ वीं निव स स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं
निखा य वी षट् ॥ ॐ वीं कव वा य दू ॥ ॐ वीं न
पुन या य वी षट् ॥ ॐ ह्रीं मृदा य दू ॥ मृध

ध्यानं ॥ सत्यं क्लान्तमस्वस्वयममलं कीर्तयिषु
 मध्वस्तुलं योगमवृष्टमतिप्रसन्नवदनं रुषा
 सहस्राक्षलं तीक्ष्णवक्त्रपिनाकधातयवना
 निजाद्यमर्कस्तुविं कुशीरुतहृदित्यमिह
 धवलं लक्ष्मीनृसिंहं रुज ॥ ०० सिद्धान्तं ॥ ॐ

क्रोप्रोप्रोप्रोप्रो नमः ॐ नमान् सिंहय
 सर्वदुष्टविनाशाय सर्वजनभाहनाय स
 र्ववाञ्छवर्धक्य ॐ नमान् सिंहय सिंह
 यसिंहनाजाय नवकं ॥ विष्णु नमा काल
 इन्द्रा केनालवदनाय ॐ उग्राय ॐ उग्रवी

श्री ॐ उग्र विष्णु यव द्वादशाय नमः
 यव द्वादशाय नमः यव द्वादशाय नमः
 श्री नृसिंय नमः साहा उ नमान् नृसिंहाय क
 पिल उठा य नृमाय वा वा य नृसिंहाय नमः
 य उग्र वन्द्य पाय ॐ श्री ॐ श्री ॐ श्री ॐ

कृष्ण कृष्ण कृष्ण सर्वत्रा गमनां सर्वं ध
 सर्वत्रा गमनां सर्वं ध सर्वत्रा गमनां सर्वं ध
 ध १ सर्वत्रा गमनां सर्वं ध १ सर्वत्रा गमनां सर्वं ध १
 सर्वत्रा गमनां सर्वं ध १ सर्वत्रा गमनां सर्वं ध १ सर्व
 वृष्टिका नां सर्वं ध १ सर्वत्रा गमनां सर्वं ध १

